Sanatan Dharma

হনুমান বাহুক কি ?

হনুমান বাহুক রচনা করেছিলেন তুলসী দাস জি যখন তাঁর শরীরে তীব্র ব্যথা হয়েছিল। হনুমান বাহুক পাঠ করে তিনি ভগবান হনুমানের আশীর্বাদ পেয়েছিলেন বলে তিনি তার ব্যথা এবং রোগ থেকে মুক্তি পেয়েছিলেন। তাই হনুমান বাহুক রোগ ও যন্ত্রণার অলৌকিক প্রতিকার বলে মনে করা হয়।

সর্বোপরি, হনুমান বাহুক- এটি আপনাকে ভগবান হনুমানের আশীর্বাদ দেয়. এবং আপনি আপনার সমস্ত উত্তেজনা থেকে নিশ্চিত সুরক্ষা পাবেন। অন্য কথায়., আপনি বা আপনার পরিবারের সদস্যরা যদি কোনো রোগ ও জয়েন্টের ব্যথায় ভুগছেন, বা ভালো না থাকেন। হনুমান বাহুক সাহায্য করবে যদি আপনি ভগবান হনুমানের প্রতি সম্পূর্ণ বিশ্বাস এবং ভক্তি করেন। হনুমান চালিসা এবং হনুমান অষ্টক পাঠ করতে ভুলবেন না।

सिंधु तरन, सिय –सोच हरन, रबि बाल बरन तनु । भुज बिसाल, मूरति कराल कालहु
को काल जनु ॥

गहन –दहन –निरदहन लंक निःसंक, बंक –भुव । जातुधान –बलवान मान –मद –दवन
पवनसुव ॥

कह तुलसिदास सेवत सुलभ सेवक हित सन्तत निकट ।

गुन गनत, नमत, सुमिरत जपत समन सकल –संकट –विकट ॥१॥

स्वर्न –सैल –संकास कोटि –रवि तरुन तेज घन ।

उर विसाल भुज दण्ड चण्ड नख –वज्रतन ॥

पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन ।

कपिस केस करकस लंगूर, खल –दल –बल –भानन ॥

कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति विकट ।

संताप पाप तेहि पुरुष पहि सपनेहुँ नहिं आवत निकट ॥२॥

Published on: Oct, 27 2023 14:45

झूलना

पञ्चमुख – छःमुख भृगु मुख्य भट असुर सुर , सर्व सरि समर समरत्थ सूरो ।
बांकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली , बेद बंदी बदत पैजपूरो ॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह जासुबल , बिपुल जल भरित जग जलधि झूरो ।
दुवन दल दमन को कौन तुलसीस है , पवन को पूत रजपूत रुरो ॥ ३ ॥

घनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गए भानुमन , अनुमानि सिसु केलि कियो फेर फारसो ।
पाछिले पगनि गम गगन मगन मन , क्रम को न भ्रम कपि बालक बिहार सो ॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरिहर विधि , लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खबार सो ।
बल कैंधो बीर रस धीरज कै , साहस कै , तुलसी सरीर धरे सबनि सार सो ॥ ४ ॥
भारत में पारथ के रथ केथू कपिराज , गाज्यो सुनि कुरुराज दल हल बल भो ।
कह्यो द्रोन भीषम समीर सुत महाबीर , बीर – रस – बारि – निधि जाको बल जल भो ॥
बानर सुभाय बाल केलि भूमि भानु लागि , फलँग फलाँग हूतें घाटि नभ तल भो ।
नाई – नाई – माथ जोरि – जोरि हाथ जोधा जो हैं , हनुमान देखे जगजीवन को फल भो
॥ ५ ॥
गो – पद पयोधि करि , होलिका ज्यों लाई लंक , निपट निःसंक पर पुर गल बल भो ।
द्रोन सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर , कंदुक ज्यों कपि खेल बेल कैसो
फल भो ॥

Published on: Oct, 27 2023 14:45

संकट समाज असमंजस भो राम राज , काज जुग पूगनि को करतल पल भो ।
साहसी समत्थ तुलसी को नाई जा की बाँह , लोक पाल पालन को फिर थिर थल भो
॥ ६ ॥

कमठ की पीठि जाके गोडनि की गाड़ैं मानो , नाप के भाजन भरि जल निधि जल भो
।

जातुधान दावन परावन को दुर्ग भयो , महा मीन बास तिमि तोमनि को थल भो ॥
कुम्भकरन रावन पयोद नाद ईधन को , तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान , सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥ ७ ॥
दूत राम राय को सपूत पूत पौनको तू , अंजनी को नन्दन प्रताप भूरि भानु सो
।

सीय –सोच –समन , दुरित दोष दमन , सरन आये अवन लखन प्रिय प्राण सो ॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो , प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो ।
ज्ञान गुनवान बलवान सेवा सावधान , साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥ ८ ॥
दवन दुवन दल भुवन बिदित बल , बेद जस गावत बिबुध बंदी छोर को ।
पाप ताप तिमिर तुहिन निघटन पटु , सेवक सरोरुह सुखद भानु भोर को ॥
लोक परलोक तें बिसोक सपने न सोक , तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को ।
राम को दुलारो दास बामदेव को निवास । नाम कलि कामतरु केसरी किसोर को
॥ ९ ॥

महाबल सीम महा भीम महाबान इत , महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को ।

Published on: Oct, 27 2023 14:45

Published on: Oct, 27 2023 14:45

कुलिस कठोर तनु जोर परै रोर रन, करुना कलित मन धारमिक धीर को ॥

दुर्जन को कालसो कराल पाल सज्जन को, सुमिरे हरन हार तुलसी की पीर को ।

सीय–सुख–दायक दुलारो रघुनायक को, सेवक सहायक है साहसी समीर को ॥१०॥

रचिबे को बिधि जैसे, पालिबे को हरि हर, मीच मारिबे को, ज्याईबे को सुधापान भो ।

धरिबे को धरनि, तरनि तम दलिबे को, सोखिबे कृसानु पोषिबे को हिम भानु भो ॥

खल दुःख दोषिबे को, जन परितोषिबे को, माँगिबो मलीनता को मोदक दुदान भो ।

आरत की आरति निवारिबे को तिहुँ पुर, तुलसी को साहेब हठीलो हनुमान भो ॥११॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि, सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँक को ।

देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ, बापुरे बराक कहा और राजा राँक को ॥

जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद, ताके जो अनर्थ सो समर्थ एक आँक को ।

सब दिन रुरो परै पूरो जहाँ तहाँ ताहि, जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँक को ॥१२॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि, लोकपाल सकल लखन राम जानकी ।

लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि, तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी ॥

केसरी किसोर बन्दीछोर के नेवाजे सब, कीरति बिमल कपि करुनानिधान की ।

बालक ज्यों पालि हैं कृपालु मुनि सिद्धता को, जाके हिये हुलसति हाँक

हनुमान की ॥ १३ ॥

करुनानिधान बलबुद्धि के निधान हौ , महिमा निधान गुनज्ञान के निधान हौ ।

बाम देव रुप भूप राम के सनेही , नाम , लेत देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ ॥

आपने प्रभाव सीताराम के सुभाव सील , लोक बेद बिधि के बिदूष हनुमान हौ ।

मन की बचन की करम की तिहूँ प्रकार , तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ
॥ १४ ॥

मन को अगम तन सुगम किये कपीस , काज महाराज के समाज साज साजे हैं ।

देवबंदी छोर रनरोर केसरी किसोर , जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं ।

बीर बरजोर घटि जोर तुलसी की ओर , सुनि सकुचाने साधु खल गन गाजे हैं ।

बिगरी सँवार अंजनी कुमार कीजे मोहिं , जैसे होत आये हनुमान के निवाजे
हैं ॥ १५ ॥

सवैया

जान सिरोमनि हो हनुमान सदा जन के मन बास तिहारो ।

ढ़ारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो ॥

साहेब सेवक नाते तो हातो कियो सो तहां तुलसी को न चारो ।

दोष सुनाये तैं आगेहुँ को होशियार ह्वैं हों मन तो हिय हारो ॥ १६ ॥

तेरे थपै उथपै न महेस , थपै थिर को कपि जे उर घाले ।

तेरे निबाजे गरीब निबाज बिराजत बैरिन के उर साले ॥

Published on: Oct, 27 2023 14:45

संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले ।
बूढ भये बलि मेरिहिं बार , कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥ १७ ॥

सिंधु तरे बड़े बीर दले खल , जारे हैं लंक से बंक मवासे ।
तैं रनि केहरि केहरि के बिदले अरि कुंजर छैल छवासे ॥
तोसो समत्थ सुसाहेब सेई सहै तुलसी दुख दोष दवा से ।
बानरबाज ! बढ़े खल खेचर , लीजत क्यों न लपेटि लवासे ॥ १८ ॥

अच्छ विमर्दन कानन भानि दसानन आनन भा न निहारो ।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन से कुञ्जर केहरि वारो ॥
राम प्रताप हुतासन , कच्छ , विपच्छ , समीर समीर दुलारो
पाप ते साप ते ताप तिहूँ तें सदा तुलसी कह सो रखवारो ॥ १९ ॥

घनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यो जन , मन अनुमानि बलि बोल न बिसारिये ।
सेवा जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी , साहेब सुभाव कपि साहिबी संभारिये ॥
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भान्ति , मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिये ।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के , बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये ॥ २० ॥

बालक बिलोकि , बलि बारें तें आपनो कियो , दीनबन्धु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये ।

Published on: Oct, 27 2023 14:45

रावरो भरोसो तुलसी के , रावरोई बल , आस रावरीयै दास रावरो विचारिये ॥

बड़ो बिकराल कलि काको न बिहाल कियो , माथे पगु बलि को निहारि सो निबारिये ।

केसरी किसोर रनरोर बरजोर बीर , बाँह पीर राहु मातु ज्यौं पछारि मारिये ॥ २१ ॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार , केसरी कुमार बल आपनो संबारिये ।

राम के गुलामनि को काम तरु रामदूत , मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिये ॥

साहेब समर्थ तो सों तुलसी के माथे पर , सोऊ अपराध बिनु बीर , बाँधि मारिये ।

पोखरी बिसाल बाँहु , बलि , बारिचर पीर , मकरी ज्यों पकरि के बदन बिदारिये ॥ २२ ॥

राम को सनेह , राम साहस लखन सिय , राम की भगति , सोच संकट निवारिये ।

मुद मरकट रोग बारिनिधि हेरि हारे , जीव जामवंत को भरोसो तेरो भारिये ॥

कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम पब्बयतें , सुथल सुबेल भालू बैठि कै विचारिये

महाबीर बाँकुरे बराकी बाँह पीर क्यों न , लंकिनी ज्यों लात घात ही मरोरि मारिये ॥ २३ ॥

लोक परलोकहुँ तिलोक न विलोकियत , तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये ।

कर्म , काल , लोकपाल , अग जग जीवजाल , नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥

खास दास रावरो , निवास तेरो तासु उर , तुलसी सो , देव दुखी देखिअत भारिये ।

बात तरुमूल बाँहूसूल कपिकच्छु बेलि , उपजी सकेलि कपि केलि ही उखारिये

Published on: Oct, 27 2023 14:45

॥ २४ ॥

करम कराल कंस भूमिपाल के भरोसे , बकी बक भगिनी काहू तें कहा डरैगी ।

बड़ी बिकराल बाल घातिनी न जात कहि , बाँहू बल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥

आई है बनाई बेष आप ही बिचारि देख , पाप जाय सब को गुनी के पाले परैगी ।

पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपि कान्ह तुलसी की , बाँह पीर महाबीर तेरे मारे मरैगी ॥ २५ ॥

भाल की कि काल की कि रोष की त्रिदोष की है , बेदन बिषम पाप ताप छल छाँह की ।

करमन कूट की कि जन्त्र मन्त्र बूट की , पराहि जाहि पापिनी मलीन मन माँह की ॥

पैहहि सजाय , नत कहत बजाय तोहि , बाबरी न होहि बानि जानि कपि नाँह की ।

आन हनुमान की दुहाई बलवान की , सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँह की ॥ २६ ॥

सिंहिका सँहारि बल सुरसा सुधारि छल , लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है ।

लंक परजारि मकरी बिदारि बार बार , जातुधान धारि धूरि धानी करि डारी है ॥

तोरि जमकातरि मंदोदरी कठोरि आनी , रावन की रानी मेघनाद महतारी है ।

भीर बाँह पीर की निपट राखी महाबीर , कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है ॥ २७ ॥

तेरो बालि केलि बीर सुनि सहमत धीर , भूलत सरीर सुधि सक्र रवि राहु की ।

तेरी बाँह बसत बिसोक लोक पाल सब , तेरो नाम लेत रहैं आरति न काहु की ॥

Published on: Oct, 27 2023 14:45

साम दाम भेद विधि बेदहू लबेद सिधि , हाथ कपिनाथ ही के चोटी चोर साहु की ।
आलस अनख परिहास कै सिखावन है , एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की ॥ २८ ॥

टूकनि को घर घर डोलत कँगाल बोलि , बाल ज्यों कृपाल नत पाल पालि पोसो है ।
कीन्ही है सँभार सार अँजनी कुमार बीर , आपनो बिसारि हैं न मेरेहू भरोसो है ॥
इतनो परेखो सब भान्ति समरथ आजु , कपिराज सांची कहौं को तिलोक तोसो है ।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास , चीरी को मरन खेल बालकनि कोसो है ॥ २९ ॥

आपने ही पाप तें त्रिपात तें कि साप तें , बढ़ी है बाँह बेदन कही न सहि जाति है ।
औषध अनेक जन्त्र मन्त्र टोटकादि किये , बादि भये देवता मनाये अधीकाति है ॥
करतार , भरतार , हरतार , कर्म काल , को है जगजाल जो न मानत इताति है ।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो राम दूत , ढील तेरी बीर मोहि पीर तें पिराति है ॥ ३० ॥

दूत राम राय को , सपूत पूत वाय को , समत्व हाथ पाय को सहाय असहाय को ।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत , रावन सो भट भयो मुठिका के धाय को ॥
एते बडे साहेब समर्थ को निवाजो आज , सीदत सुसेवक बचन मन काय को ।
थोरी बाँह पीर की बड़ी गलानि तुलसी को , कौन पाप कोप , लोप प्रकट प्रभाय को ॥ ३१ ॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग , छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं

Published on: Oct, 27 2023 14:45

Published on: Oct, 27 2023 14:45

।

पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाग, राम दूत की रजाई माथे मानि लेत हैं ॥

घोर जन्त्र मन्त्र कूट कपट कुरोग जोग, हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं ।

क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को, सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं ॥३२॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावन सों, तेरे घाले जातुधान भये घर घर के ।

तेरे बल राम राज किये सब सुर काज, सकल समाज साज साजे रघुबर के ॥

तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत, सजल बिलोचन बिरंचि हरिहर के ।

तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीस नाथ, देखिये न दास दुखी तोसो कनिगर के ॥३३॥

पालो तेरे टूक को परेहू चूक मूकिये न, कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये ।

भोरानाथ भोरे ही सरोष होत थोरे दोष, पोषि तोषि थापि आपनो न अव डेरिये ॥

अँबु तू हौं अँबु चूर, अँबु तू हौं डिंभ सो न, बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये ।

बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि, तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिये ॥३४॥

घेरि लियो रोगनि, कुजोगनि, कुलोगनि ज्यौं, बासर जलद घन घटा धुकि धाई है ।

बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस, रोष बिनु दोष धूम मूल मलिनाई है ॥

करुनानिधान हनुमान महा बलवान , हेरि हँसि हाँकि फूंकि फौंजै ते उड़ाई है ।

खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि , केसरी किसोर राखे बीर बरिआई है ॥ ३५ ॥

सवैया

राम गुलाम तु ही हनुमान गोसाँई सुसाँई सदा अनुकूलो ।

पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू पितु मातु सों मंगल मोद समूलो ॥

बाँह की बेदन बाँह पगार पुकारत आरत आनँद भूलो ।

श्री रघुबीर निवारिये पीर रहौं दरबार परो लटि लूलो ॥ ३६ ॥

घनाक्षरी

काल की करालता करम कठिनाई कीधौ , पाप के प्रभाव की सुभाय बाय बावरे ।

बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन , सोई बाँह गही जो गही समीर डाबरे ॥

लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि , सींचिये मलीन भो तयो है तिहुँ तावरे ।

भूतनि की आपनी पराये की कृपा निधान , जानियत सबही की रीति राम रावरे ॥ ३७ ॥

पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुंह पीर , जर जर सकल पीर मई है ।

देव भूत पितर करम खल काल ग्रह , मोहि पर दवरि दमानक सी दई है ॥

हौं तो बिनु मोल के बिकानो बलि बारे हीतें , ओट राम नाम की ललाट लिखि लई है ।

Published on: Oct, 27 2023 14:45

कुँभज के किंकर बिकल बूढ़े गोखुरनि , हाय राम राय ऐसी हाल कहूँ भई है
॥ ३८ ॥

बाहुक सुबाहु नीच लीचर मरीच मिलि , मुँह पीर केतुजा कुरोग जातुधान है ।
राम नाम जप जाग कियो चहों सानुराग , काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान है ॥
सुमिरे सहाय राम लखन आखर दौऊ , जिनके समूह साके जागत जहान है ।
तुलसी सँभारि ताडका सँहारि भारि भट , बेधे बरगद से बनाई बानवान है ॥ ३९ ॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो , राम नाम लेत माँगि खात टूक टाक हौं ।
परयो लोक रीति में पुनीत प्रीति राम राय , मोह बस बैठो तोरि तरकि तराक
हौं ॥
खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो , अंजनी कुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं ।
तुलसी गुसाँई भयो भोंडे दिन भूल गयो , ताको फल पावत निदान परिपाक हौं
॥ ४० ॥

असन बसन हीन बिषम बिषाद लीन , देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को ।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो , दियो फल सील सिंधु आपने सुभाय को ॥
नीच यहि बीच पति पाइ भरु हाईगो , बिहाइ प्रभु भजन बचन मन काय को ।
ता तें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस , फूटि फूटि निकसत लोन राम राय को
॥ ४१ ॥

जीओ जग जानकी जीवन को कहाइ जन , मरिबे को बारानसी बारि सुर सरि को ।
तुलसी के दोहूँ हाथ मोदक हैं ऐसे ठाँऊ , जाके जिये मुये सोच करिहैं न
लरि को ॥

Published on: Oct, 27 2023 14:45

मो को झूँटो साँचो लोग राम कौ कहत सब , मेरे मन मान है न हर को न हरि को ।

भारी पीर दुसह सरीर तें बिहाल होत , सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को
॥ ४२ ॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित , हित उपदेश को महेस मानो गुरु कै ।

मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय , तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुर कै ॥

ब्याधि भूत जनित उपाधि काहु खल की , समाधि की जै तुलसी को जानि जन फुर कै ।

कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ , रोग सिंधु क्यों न डारियत गाय खुर कै
॥ ४३ ॥

कहों हनुमान सों सुजान राम राय सों , कृपानिधान संकर सों सावधान सुनिये ।

हरष विषाद राग रोष गुन दोष मई , बिरची बिरञ्ची सब देखियत दुनिये ॥

माया जीव काल के करम के सुभाय के , करैया राम बेद कहें साँची मन गुनिये ।

तुम्ह तें कहा न होय हा हा सो बुझैये मोहिं , हौं हूँ रहों मौनही वयो सो जानि लुनिये ॥ ४४ ॥

22 দিনের সম্পুট পথের পদ্ধতি:

প্রথম দিনে, সম্পূর্ণ পড়ুন একটি পুনরাবৃত্তি, দ্বিতীয় দিনে দুটি পুনরাবৃত্তি, তৃতীয় দিনে তিনটি পুনরাবৃত্তি, এইভাবে 11 দিনের জন্য প্রতিদিন একটি পুনরাবৃত্তি বৃদ্ধি করুন।

Published on: Oct, 27 2023 14:45

তারপর দ্বাদশ দিন থেকে এই ক্রমটি উল্টে দিয়ে 11 দিন আবৃত্তি করুন, অর্থাৎ দ্বাদশ দিনে 11টি, তেরোতম দিনে 10টি, চৌদ্দতম দিনে 6টি, এভাবে প্রতিদিন একটি তোলোওয়াত কমিয়ে অনুদান শেষে করুন। বাইশতম দিনে একটি তোলোওয়াত করা।সাধারণত 22 দিনের আচার দ্বারা কাজটি প্রমাণিত হয়।

দ্রষ্টব্য: - আচার পালনকারী ব্যক্তিকে অবশ্যই ব্রহ্মচর্য এবং সদাচরণ পালন করতে হবে অন্তত আচার শেষ না হওয়া পর্যন্ত। মনোযোগ সহকারে পাঠ করুন, শুদ্ধ করুন, ঘোড়দৌড় করবেন না। ভালবাসার সাথে এটি করুন

আচার পদ্ধতি:- প্রথমে ষোড়শোপাচার বা পঞ্চোপচার দিয়ে শ্রী হনুমানজির পূজা করুন। লাল ফুল হিবিস্কাস অফার. লাড্ডু ভোগ লাগায়. (খাঁটি ঘি পেলে লাড্ডু হিসেবে নিবেদন কর, নইলে কলা ফল বা পাঁচ ফল ইত্যাদি)।

পড়ার সময় খাঁটি ঘি বা তিলের তেলের প্রদীপ জ্বালাতে হবে। গুগলের সমান রোদ দিতে থাকুন। জীবনের প্রথম দিনে লাড্ডু, ফল ও ফুল নিবেদন করতে হবে, প্রতিদিন একই সংখ্যায় নিবেদন করতে হবে, কম বা বেশি নয়। ব্রহ্মচর্য ও সদাচার পালন করতে হবে।

ব্রহ্ম পিশাচ পলায়ন পদ্ধতি

ভাভা জয়রামদাসজী লিখিছেন যে এগারো দিন ধরে প্রতিদিন শ্রী হনুমান বাহুক স্তোত্রের এগারোটি পাঠ করলে ব্রহ্ম-পিশাচরা পালিয়ে যায়।

বিধি-নিষেধ, ফল, ভূমিষায়ন, ব্রহ্মচর্য, নতুন জামাকাপড়, দুটি ধুতি, রেশমের চাদর একটি, গামছা (গামছা, সফি) দুটি, ল্যাংটো, খাদুন, সহজ পশমী, পাঁচপত্র একটি, আচমনি একটি, ভোগের নতুন থালা, লোটা, গ্লাস, বাটি, সমতল উজ্জ্বল ধাতব কলস।

অন্যান্য বন্য সম্প্রদায় হনুমানকে উত্সর্গীকৃত। 11 শেষে ব্রাহ্মণের অন্ন। খাবারে অবশ্যই মোদক থাকতে হবে। প্রত্যেক ব্রাহ্মণকে দক্ষিণা ১২৫ টাকা হলেও হবে কিন্তু ১২৫ টাকার কম হবে না। আরো বেশি হতে পারে.....

[illegible]

[illegible]

Published on: Oct, 27 2023 14:45

[illegible]

छप्पय :

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बाल-बरन तनु ।
भुजबिसाल, मूरतिकरालकालहुकोकालजनु ॥
गहन-दहन-निरदहन लंक निःसंक, बंक-भुव ।
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव ॥
कह तुलसिदास सेवत सुलभ सेवक हित सन्तत निकट ।
गुन-गनत, नमत, सुमिरत, जपत समन सकल-संकट-विकट ॥ १ ॥

[illegible]

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन ।

Published on: Oct, 27 2023 14:45

उर बिसाल भुज -दंड चंड नख -बज्र बज्र -तन ॥
पिंग नयन , भृकुटी कराल रसना दसनानन ।
कपिस केस , करकस लँगूर , खल-दल बल भानन ॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट ।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहुँ नहिं आवत निकट ॥ २ ॥

[illegible]

झूलना :

पञ्चमुख -छमुख -भृगु मुख्य भट असुर सुर , सर्व -सरि -समर समरत्थ सूरो ।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली , बेद बंदी बदत पैजपूरो ॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह , जासुबल , बिपुल -जल-भरित जग -जलधि झूरो ।
दुवन -दल-दमनको कौन तुलसीस है , पवन को पूत रजपूत रुरो ॥ ३

Published on: Oct, 27 2023 14:45

Published on: Oct, 27 2023 14:45

॥

शिव, स्वामि-कार्तिक, परशुराम, दैत्य और देवता-वृन्द सबके युद्ध रुपी नदी से पार जाने में योग्य योद्धा हैं । वेदरुपी वन्दीजन कहते हैं – आप पूरी प्रतिज्ञा वाले चतुर योद्धा, बड़े कीर्तिमान् और यशस्वी हैं । जिनके गुणों की कथा को रघुनाथ जी ने श्रीमुख से कहा तथा जिनके अतिशय पराक्रम से अपार जल से भरा हुआ संसार-समुद्र सूख गया । तुलसी के स्वामी सुन्दर राजपूत (पवनकुमार) – के बिना राक्षसों के दल का नाश करने वाला दूसरा कौन है ? (कोई नहीं) ॥ ३ ॥

घनाक्षरी:

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन-अनुमानि सिसु-केलि कियो फेरफार सो ।

पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन, क्रम को न भ्रम, कपि बालक बिहार सो ॥

कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि, लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो।

बल कैंधौं बीर-रस धीरज कै, साहस कै, तुलसी सरीर धरे सबनि को सार सो ॥ ४ ॥

सूर्य भगवान् के समीप में हनुमान् जी विद्या पढ़ने के लिये गये, सूर्यदेव ने मन में बालकों का खेल समझकर बहाना किया (कि मैं स्थिर नहीं रह सकता और बिना आमने-सामने के पढ़ना-पढ़ाना असम्भव है) । हनुमान् जी ने भास्कर की ओर मुख करके पीठ की तरफ पैरों से प्रसन्न-मन आकाश-मार्ग में बालकों के खेल के समान गमन किया और उससे पाठ्यक्रम में

Published on: Oct, 27 2023 14:45

किसी प्रकार का भ्रम नहीं हुआ । इस अचरज के खेल को देखकर इन्द्रादि लोकपाल, विष्णु, रुद्र और ब्रह्मा की आँखें चौंधिया गयीं तथा चित्त में खलबली-सी उत्पन्न हो गयी । तुलसीदासजी कहते हैं – सब सोचने लगे कि यह न जाने बल, न जाने वीररस, न जाने धैर्य, न जाने हिम्मत अथवा न जाने इन सबका सार ही शरीर धारण किये हैं ॥ ४ ॥

भारत में पारथ के रथ केथू कपिराज, गाज्यो सुनि कुरुराज दल हल बल भो ।

कह्यो द्रोन भीषम समीर सुत महाबीर, बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ॥

बानर सुभाय बाल केलि भूमि भानु लागि, फलँग फलाँग हूँतें घाटि नभतल भो ।

नाई-नाई माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं, हनुमान देखे जगजीवन को फल भो ॥ ५ ॥

महाभारत में अर्जुन के रथ की पताका पर कपिराज हनुमान् जी ने गर्जन किया, जिसको सुनकर दुर्योधन की सेना में घबराहट उत्पन्न हो गयी । द्रोणाचार्य और भीष्म-पितामह ने कहा कि ये महाबली पवनकुमार है । जिनका बल वीर-रस-रुपी समुद्र का जल हुआ है । इनके स्वाभाविक ही बालकों के खेल के समान धरती से सूर्य तक के कुदान ने आकाश-मण्डल को एक पग से भी कम कर दिया था । सब योद्धागण मस्तक नवा-नवाकर और हाथ जोड़-जोड़कर देखते हैं । इस प्रकार हनुमान् जी का दर्शन पाने से उन्हें संसार में जीने का फल मिल गया ॥ ५ ॥

गो-पद पयोधि करि होलिका ज्यों लाई लंक, निपट निसंक परपुर गलबल भो ।

Published on: Oct, 27 2023 14:45

द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर, कंदुक-ज्यों कपि खेल बेल कैसो फल भो ॥

संकट समाज असमंजस भो रामराज, काज जुग पूगनि को करतल पल भो ।

साहसी समत्थ तुलसी को नाह जाकी बाँह, लोकपाल पालन को फिर थिर थल भो ॥ ६ ॥

समुद्र को गोखुर के समान करके निडर होकर लंका-जैसी (सुरक्षित नगरी को) होलिका के सदृश जला डाला, जिससे पराये (शत्रु के) पुर में गड़बड़ी मच गयी । द्रोण-जैसा भारी पर्वत खेल में ही उखाड़ गेंद की तरह उठा लिया, वह कपिराज के लिये बेल-फल के समान क्रीडा की सामग्री बन गया । राम-राज्य में अपार संकट (लक्ष्मण-शक्ति) -से असमंजस उत्पन्न हुआ (उस समय जिसके पराक्रम से) युग समूह में होने वाला काम पलभर में मुट्ठी में आ गया । तुलसी के स्वामी बड़े साहसी और सामर्थ्यवान् हैं, जिनकी भुजाएँ लोकपालों को पालन करने तथा उन्हें फिर से स्थिरता-पूर्वक बसाने का स्थान हुईं ॥ ६ ॥

कमठ की पीठि जाके गोडनि की गाड़ैं मानो, नाप के भाजन भरि जल निधि जल भो ।

जातुधान-दावन परावन को दुर्ग भयो, महामीन बास तिमि तोमनि को थल भो ॥

कुम्भकरन-रावन पयोद-नाद-ईंधन को, तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।

भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान, सारिखो त्रिकाल न

Published on: Oct, 27 2023 14:45

त्रिलोक महाबल भो ॥ ७ ॥

कच्छप की पीठ में जिनके पाँव के गड़हे समुद्र का जल भरने के लिये मानो नाप के पात्र (बर्तन) हुए । राक्षसों का नाश करते समय वह (समुद्र) ही उनके भागकर छिपने का गढ़ हुआ तथा वही बहुत-से बड़े-बड़े मत्स्यों के रहने का स्थान हुआ । तुलसीदासजी कहते हैं – रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद रुपी ईंधन को जलाने के निमित्त जिनका प्रताप प्रचण्ड अग्नि हुआ । भीष्मपितामह कहते हैं – मेरी समझ में हनुमान् जी के समान अत्यन्त बलवान् तीनों काल और तीनों लोक में कोई नहीं हुआ ॥ ७ ॥

दूत रामराय को, सपूत पूत पौनको, तू अंजनी को नन्दन प्रताप भूरि भानु सो ।

सीय-सोच-समन, दुरित दोष दमन, सरन आये अवन, लखन प्रिय प्रान सो ॥

दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो, प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो ।

ज्ञान गुनवान बलवान सेवा सावधान, साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥ ८ ॥

आप राजा रामचन्द्रजी के दूत, पवनदेव के सुयोग्य पुत्र, अंजनीदेवी को आनन्द देने वाले, असंख्य सूर्यों के समान तेजस्वी, सीताजी के शोकनाशक, पाप तथा अवगुण के नष्ट करने वाले, शरणागतों की रक्षा करने वाले और लक्ष्मणजी को प्राणों के समान प्रिय हैं । तुलसीदासजी के दुस्सह दरिद्र-रुपी रावण का नाश करने के लिये आप तीनों लोकों में आश्रय रुप प्रकट हुए हैं । अरे लोगो ! तुम ज्ञानी, गुणवान्, बलवान् और सेवा (दूसरों को आराम पहुँचाने) – में सजग हनुमान् जी के समान चतुर स्वामी को अपने हृदय

में बसाओ ॥ ८ ॥

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल, बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को ।

पाप-ताप-तिमिर तुहिन-विघटन-पटु, सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोर को ॥

लोक-परलोक तें बिसोक सपने न सोक, तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को ।

राम को दुलारो दास बामदेव को निवास, नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोर को ॥ ९ ॥

दानवों की सेना को नष्ट करने में जिनका पराक्रम विश्व-विख्यात है, वेद यश-गान करते हैं कि देवताओं को कारागार से छुड़ाने वाला पवनकुमार के सिवा दूसरा कौन है? आप पापान्धकार और कष्ट-रुपी पाले को घटाने में प्रवीण तथा सेवक रुपी कमल को प्रसन्न करने के लिये प्रातः-काल के सूर्य के समान हैं। तुलसी के हृदय में एकमात्र हनुमान् जी का भरोसा है, स्वप्न में भी लोक और परलोक की चिन्ता नहीं, शोकरहित हैं, रामचन्द्रजी के दुलारे शिव-स्वरुप (ग्यारह रुद्र में एक) केसरी-नन्दन का नाम कलिकाल में कल्प-वृक्ष के समान है ॥ ९ ॥

महाबल-सीम महाभीम महाबान इत, महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को ।

कुलिस-कठोर तनु जोरपरै रोर रन, करुना-कलित मन धारमिक धीर को ॥

दुर्जन को कालसो कराल पाल सज्जन को, सुमिरे हरनहार

Published on: Oct, 27 2023 14:45

तुलसी की पीर को ।

सीय -सुख -दायक दुलारो रघुनायक को , सेवक सहायक है साहसी
समीर को ॥ १० ॥

आप अत्यन्त पराक्रम की हद , अतिशय कराल , बड़े बहादुर और रघुनाथजी द्वारा चुने हुए महाबलवान् विख्यात योद्धा हैं । वज्र के समान कठोर शरीर वाले जिनके जोर पड़ने अर्थात् बल करने से रणस्थल में कोलाहल मच जाता है , सुन्दर करुणा एवं धैर्य के स्थान और मन से धर्माचरण करने वाले हैं । दुष्टों के लिये काल के समान भयावने , सज्जनों को पालने वाले और स्मरण करने से तुलसी के दुःख को हरने वाले हैं । सीताजी को सुख देने वाले , रघुनाथजी के दुलारे और सेवकों की सहायता करने में पवनकुमार बड़े ही साहसी हैं ॥ १० ॥

रचिबे को बिधि जैसे , पालिबे को हरि , हर मीच मारिबे को ,
ज्याईबे को सुधापान भो ।

धरिबे को धरनि , तरनि तम दलिबे को , सोखिबे कृसानु , पोषिबे
को हिम -भानु भो ॥

खल -दुःख दोषिबे को , जन -परितोषिबे को , माँगिबो मलीनता को
मोदक सुदान भो ।

आरत की आरति निवारिबे को तिहुँ पुर , तुलसी को साहेब
हठीलो हनुमान भो ॥ ११ ॥

आप सृष्टि -रचना के लिये ब्रह्मा , पालन करने को विष्णु , मारने को रुद्र और जिलाने के लिये अमृत -पान के समान हुए ; धारण करने में धरती , अन्धकार को नसाने में सूर्य , सुखाने में अग्नि , पोषण करने में चन्द्रमा और सूर्य हुए ; खलों को दुःख देने और दूषित बनाने वाले , सेवकों को संतुष्ट करने

Published on: Oct, 27 2023 14:45

वाले एवं माँगना -रुपी मैलेपन का विनाश करने में मोदक -दाता हुए । तीनों लोकों में दुःखियों के दुःख छुड़ाने के लिये तुलसी के स्वामी श्रीहनुमान् जी दृढ़ -प्रतिज्ञ हुए हैं ॥ ११ ॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि , सानुकूल सूलपानि
नवै नाथ नाँक को ।

देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ , बापुरे बराक कहा
और राजा राँक को ॥

जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद , ताके जो अनर्थ सो समर्थ
एक आँक को ।

सब दिन रुरो परै पूरो जहाँ -तहाँ ताहि , जाके है भरोसो
हिये हनुमान हाँक को ॥ १२ ॥

सेवक हनुमान् जी की सेवा समझकर जानकीनाथ ने संकोच माना अर्थात् अहसान से दब गये , शिवजी पक्ष में रहते और स्वर्ग के स्वामी इन्द्र नवते हैं । देवी -देवता , दानव सब दया के पात्र बनकर हाथ जोड़ते हैं , फिर दूसरे बेचारे दरिद्र -दुःखिया राजा कौन चीज हैं । जागते , सोते , बैठते , डोलते , क्रीड़ा करते और आनन्द में मग्न (पवनकुमार के) सेवक का अनिष्ट चाहेगा ऐसा कौन सिद्धान्त का समर्थ है ? उसका जहाँ -तहाँ सब दिन श्रेष्ठ रीति से पूरा पड़ेगा , जिसके हृदय में अंजनीकुमार की हाँक का भरोसा है ॥ १२ ॥

सानुगसगौरिसानुकूलसूलपानिताहि ,
लोकपालसकललखनरामजानकी ।

लोकपरलोकको बिसोक सो तिलोक ताहि , तुलसी तमाइ कहा काहू

Published on: Oct, 27 2023 14:45

बीर आनकी ॥

केसरीकिसोरबन्दीछोरके नेवाजे सब , कीरति बिमल कपि
करुनानिधान की ।

बालक -ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको , जाके हिये
हुलसति हाँक हनुमान की ॥ १३ ॥

जिसके हृदय में हनुमान् जी की हाँक उल्लसित होती है ,
उसपर अपने सेवकों और पार्वतीजी के सहित शंकर भगवान् ,
समस्त लोकपाल , श्रीरामचन्द्र , जानकी और लक्ष्मणजी भी
प्रसन्न रहते हैं । तुलसीदासजी कहते हैं फिर लोक और
परलोक में शोकरहित हुए उस प्राणी को तीनों लोकों में
किसी योद्धा के आश्रित होने की क्या लालसा होगी ? दया -
निकेत केसरी -नन्दन निर्मल कीर्तिवाले हनुमान् जी के
प्रसन्न होने से सम्पूर्ण सिद्ध -मुनि उस मनुष्य पर
दयालु होकर बालक के समान पालन करते हैं , उन करुणानिधान
कपीश्वर की कीर्ति ऐसी ही निर्मल है ॥ १३ ॥

करुनानिधान , बलबुद्धि के निधान मोद -महिमा निधान , गुन -
ज्ञान के निधान हौ ।

बामदेव -रुप भूप राम के सनेही , नाम लेत -देत अर्थ धर्म
काम निरबान हौ ॥

आपने प्रभाव सीताराम के सुभाव सील , लोक -बेद -बिधि के
बिदूष हनुमान हौ ।

मन की बचन की करम की तिहूँ प्रकार , तुलसी तिहारो तुम
साहेब सुजान हौ ॥ १४ ॥

तुम दया के स्थान , बुद्धि -बल के धाम , आनन्द महिमा के

Published on: Oct, 27 2023 14:45

मन्दिर और गुण-ज्ञान के निकेतन हो; राजा रामचन्द्र के स्नेही, शंकरजी के रुप और नाम लेने से अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के देने वाले हो। हे हनुमान् जी! आप अपनी शक्ति से श्रीरघुनाथजी के शील-स्वभाव, लोक-रीति और वेद-विधि के पण्डित हो! मन, वचन, कर्म तीनों प्रकार से तुलसी आपका दास है, आप चतुर स्वामी हैं अर्थात् भीतर-बाहर की सब जानते हैं ॥ १४ ॥

मन को अगम, तन सुगम किये कपीस, काज महाराज के समाज साज साजे हैं।

देव-बंदी छोर रनरोर केसरी किसोर, जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं।

बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर, सुनि सकुचाने साधु खल गन गाजे हैं।

बिगरी सँवार अंजनी कुमार कीजे मोहिं, जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं ॥ १५ ॥

हे कपिराज! महाराज रामचन्द्रजी के कार्य के लिये सारा साज-समाज सजकर जो काम मन को दुर्गम था, उसको आपने शरीर से करके सुलभ कर दिया। हे केशरीकिशोर! आप देवताओं को बन्दीखाने से मुक्त करने वाले, संग्राम-भूमि में कोलाहल मचाने वाले हैं, और आपकी नामवरी युग-युग से संसार में विराजती है। हे जबरदस्त योद्धा! आपका बल तुलसी के लिये क्यों घट गया, जिसको सुनकर साधु सकुचा गये हैं और दुष्टगण प्रसन्न हो रहे हैं, हे अंजनीकुमार! मेरी बिगड़ी बात उसी तरह सुधारिये जिस प्रकार आपके प्रसन्न होने से होती (सुधरती) आयी है ॥ १५ ॥

Published on: Oct, 27 2023 14:45

सवैया :

जान सिरोमनि हौ हनुमान सदा जन के मन बास तिहारो ।

ढ़ारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो ॥

साहेब सेवक नाते तो हातो कियो सो तहाँ तुलसी को न चारो ।

दोष सुनाये तें आगेहुँ को होशियार ह्वैं हों मन तौ हिय हारो ॥ १६ ॥

हे हनुमान् जी ! आप ज्ञान -शिरोमणी हैं और सेवकों के मन में आपका सदा निवास है । मैं किसी का क्या गिराता वा बिगाड़ता हूँ । हे स्वामी ! आपने मुझे सेवक के नाते से च्युत कर दिया , इसमें तुलसी का कोई वश नहीं है । यद्यपि मन हृदय में हार गया है तो भी मेरा अपराध सुना दीजिये , जिसमें आगे के लिये होशियार हो जाऊँ ॥ १६ ॥

तेरे थपे उथपै न महेस , थपै थिरको कपि जे घर घाले ।

तेरे निवाजे गरीब निवाज बिराजत बैरिन के उर साले ॥

संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले ।

बूढ़ भये , बलि , मेरिहि बार , कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥ १७ ॥

हे वानरराज ! आपके बसाये हुए को शंकर भगवान् भी नहीं उजाड़ सकते और जिस घर को आपने नष्ट कर दिया उसको कौन बसा सकता है ? हे गरीबनिवाज ! आप जिस पर प्रसन्न हुए , वे शत्रुओं के हृदय में पीड़ा रुप होकर विराजते हैं ।

Published on: Oct, 27 2023 14:45

तुलसीदास जी कहते हैं , आपका नाम लेने से सम्पूर्ण संकट और सोच मकड़ी के जाले के समान फट जाते हैं । बलिहारी ! क्या आप मेरी ही बार बूढ़े हो गये अथवा बहुत -से गरीबों का पालन करते – करते अब थक गये हैं ? (इसी से मेरा संकट दूर करने में ढील कर रहे हैं) ॥ १७ ॥

सिंधु तरे , बड़े बीर दले खल , जारे हैं लंक से बंक मवा से
।

तैं रनि -केहरि केहरि के बिदले अरि -कुंजर छैल छवा से ॥

तोसों समत्थ सुसाहेब सेई सहै तुलसी दुख दोष दवा से ।

बानर बाज ! बढ़े खल -खेचर , लीजत क्यों न लपेटि लवा -से ॥
१८ ॥

आपने समुद्र लाँघकर बड़े -बड़े दुष्ट राक्षसों का विनाश करके लंका -जैसे विकट गढ़ को जलाया । हे संग्राम -रुपी वन के सिंह ! राक्षस शत्रु बने -ठने हाथी के बच्चे के समान थे , आपने उनको सिंह की भाँति विनष्ट कर डाला । आपने बराबर समर्थ और अच्छे स्वामी की सेवा करते हुए तुलसी दोष और दुःख की आग को सहन करे (यह आश्चर्य की बात है) । हे वानर -रुपी बाज ! बहुत -से दुष्ट -जन -रुपी पक्षी बढ़ गये हैं , उनको आप बटेर के समान क्यों नहीं लपेट लेते ? ॥ १८ ॥

अच्छ -विमर्दन कानन -भानि दसानन आनन भा न निहारो ।

बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न -से कुञ्जर केहरि -बारो ॥

राम -प्रताप -हुतासन , कच्छ , बिपच्छ , समीर समीर -दुलारो ।

पाप -तें साप -तें ताप तिहूँ -तें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो

Published on: Oct, 27 2023 14:45

॥ १९ ॥

हे अक्षयकुमार को मारने वाले हनुमान् जी ! आपने अशोक - वाटिका को विध्वंस किया और रावण -जैसे प्रतापी योद्धा के मुख के तेज की ओर देखा तक नहीं अर्थात् उसकी कुछ भी परवाह नहीं की । आप मेघनाद , अकम्पन और कुम्भकर्ण -सरीखे हाथियों के मद को चूर्ण करने में किशोरावस्था के सिंह हैं । विपक्षरुप तिनकों के ढेर के लिये भगवान् राम का प्रताप अग्नि -तुल्य है और पवनकुमार उसके लिये पवन -रुप हैं । वे पवननन्दन ही तुलसीदास को सर्वदा पाप , शाप और संताप — तीनों से बचाने वाले हैं ॥ १९ ॥

घनाक्षरी :

जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन , मन अनुमानि बलि , बोल
न बिसारिये ।

सेवा -जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी , साहेब सुभाव कपि
साहिबी सँभारिये ॥

अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति , मोदक मरै जो ताहि
माहुर न मारिये ।

साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के , बाँह पीर महाबीर
बेगि ही निवारिये ॥ २० ॥

हे हनुमान् जी ! बलि जाता हूँ , अपनी प्रतिज्ञा को न भुलाइये , जिसको संसार जानता है , मन में विचारिये , आपका कृपा -पात्र जन बाधारहित और सदा प्रसन्न रहता है । हे स्वामी कपिराज ! तुलसी कभी सेवा के योग्य था ? क्या चूक हुई है , अपनी साहिबी को सँभालिये , मुझे अपराधी समझते हों तो सहस्त्रों भाँति की दुर्दशा कीजिये , किन्तु जो लड्डू देने से मरता हो उसको विष से न मारिये । हे महाबली , साहसी ,

Published on: Oct, 27 2023 14:45

पवन के दुलारे , रघुनाथजी के प्यारे ! भुजाओं की पीड़ा को
शीघ्र दूर कीजिये ॥ २० ॥

बालक बिलोकि , बलि बारेतें आपनो कियो , दीनबन्धु दया
कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये ।

रावरो भरोसो तुलसी के , रावरोई बल , आस रावरीयै दास रावरो
बिचारिये ॥

बड़ो बिकराल कलि , काको न बिहाल कियो , माथे पगु बलि को ,
निहारि सो निवारिये ।

केसरी किसोर , रनरोर , बरजोर बीर , बाँहुपीर राहुमातु
ज्यौं पछारि मारिये ॥ २१ ॥

[illegible] ! [illegible], [illegible] । [illegible], [illegible], [illegible] । [illegible] ? [illegible] । [illegible], [illegible] ! [illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार , केसरी कुमार बल आपनो
सँभारिये ।

राम के गुलामनि को कामतरु रामदूत , मोसे दीन दूबरे को
तकिया तिहारिये ॥

साहेब समर्थ तोसों तुलसी के माथे पर , सोऊ अपराध बिनु

Published on: Oct, 27 2023 14:45

बीर , बाँधि मारिये ।

पोखरी बिसाल बाँहु , बलि , बारिचर पीर , मकरी ज्यौं पकरि कै
बदन बिदारिये ॥ २२ ॥

[illegible]

Published on: Oct, 27 2023 14:45

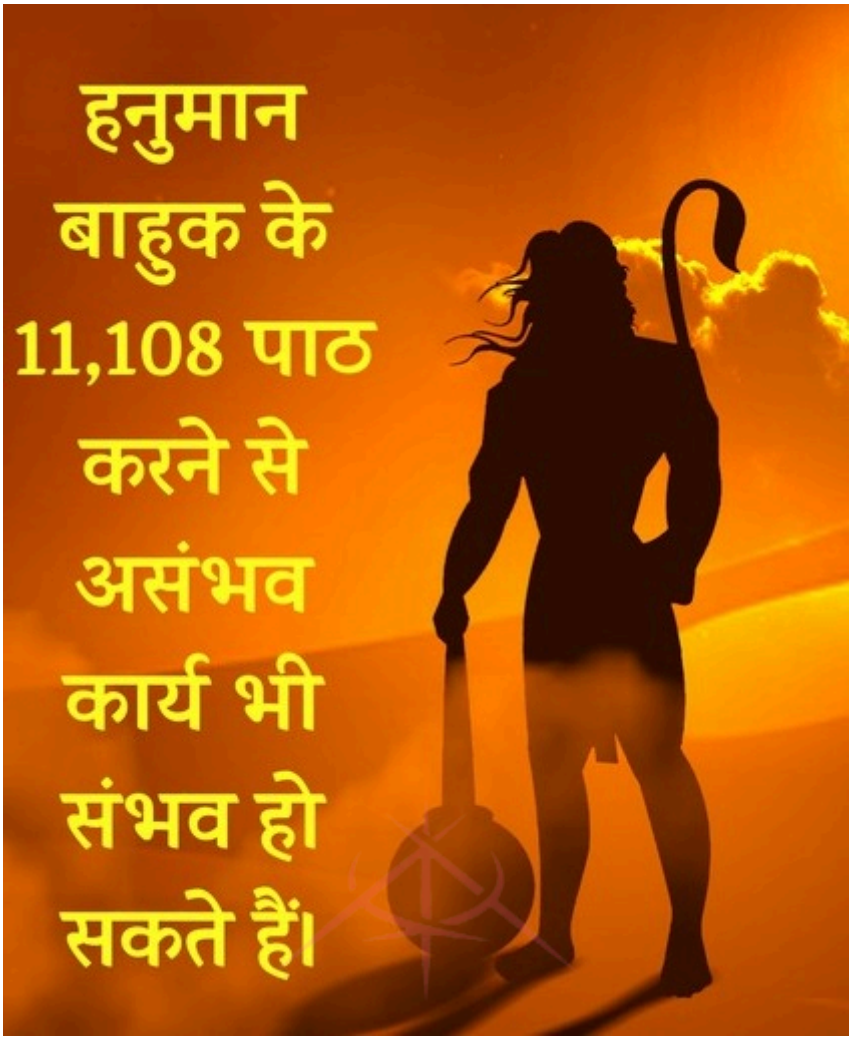

Published on: Oct, 27 2023 14:45